मीठे–2 रूहानी बच्चों को नमस्ते। उत्तर भी नहीं करते हो? कि बाबा नमस्ते। क्योंकि बच्चे जानते हैं कि बाबा हमको ब्रह्माण्ड का मालिक भी बनाते हैं तो विश्व का भी मालिक बनाते हैं। बाप तो सिर्फ ब्रह्माण्ड का मालिक बनाते हैं। विश्व का मालिक नहीं बनते हैं। बच्चों को ब्रहमाण्ड और विश्व का मालिक बनाते है। तो बताओ कि बड़ा कौन ठहरा? बच्चे बड़े ठहरे ना। इसलिए ही बच्चे फिर नमस्ते करते हैं कि बाबा आप ही हमें विश्व का और ब्रह्माण्ड का मालिक बनाते हैं। इसलिए आपको भी नमस्ते। मुस्लमान लोग भी सलामेलेकम और वालेकम सलाम कहते है ना। तुम बच्चों को भी खुशी है जिनको कि निश्चय है। निश्चय बिना तो कोई यहाँ आ भी नहीं सकते हैं। यहाँ जो भी आते हैं वो समझते हैं कि हम किसी मनुष्य गुरू के पास नहीं जाते हैं। मनुष्य बाप के पास, मनुष्य टीचर के पास वा मनुष्यगुरू के पास नहीं जाते हैं। तुम आते ही हो रूहानी बाप, रूहानी गुरू, रूहानी ही टीचर के पास। वो मनुष्य तो अनेक ही है। भक्तिमार्ग के शास्त्रों में यह भी है कि रचता और रचना के ज्ञान को भी नहीं जानते हैं। ना जाने कारण ही उनको आर्फन कहा जाता है। जो अच्छे पढ़े– लिखे होते हैं वो अच्छी तरह से समझ सकते हैं कि वो हम सभी आत्माओं का बाप है। वो सभी का एक ही बाप है। सिर्फ़ इतना ही नहीं जानते हैं कि वो बाप निराकार है। वो आकर बाप, टीचर, गुरू का भी रूप धारण करते है। गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है। गीता ही है सर्वशास्त्रमई श्रीमद्भगवतगीता उत्तम–ते–उत्तम। गीता को ही माई बाप कहा जाता है। और जो भी शास्त्र आदि हैं उनको माई–बाप नहीं कहेंगे। श्रीमद् भबवाद गीता माता गाई जाती है। भगवान के मुख कमल से निकला हुआ गीता का ज्ञान ऊँच ते ऊँच बाप है तो जरूर फिर वो भी ऊँच ते ऊँच की ही गाई हुई होगी। गीता ही ....। बाकी सब है शास्त्र उनके ....। क्रियेशन। रचना से कब वर्सा मिल नहीं सकता। अगर मानेंगे भी तो अल्पकाल के लिये। दूसरे इतने ढेर शास्त्र हैं जिनको पढ़ने पर अल्पकाल का सुख मिलता है। एक जन्म की लिए। जो तो कि मनुष्य ही मनुष्यों को पढ़ाते हैं। हर प्रकार की जो भी पढ़ाईयाँ हैं वो अल्पकाल के ही लिये मनुष्य, मनुष्यों को ही पढ़ाते हैं। अल्पकाल का सुख मिला। फिर दूसरे जन्म में दूसरी पढ़ाई पढ़नी पढ़ेगी। यहाँ तो एक ही निराकार बाप है जो कि 21 जन्मों के लिये वर्सा देते है। कोई मनुष्य तो दे नहीं सकते। वो तो वर्थ नॉट अपेनी कह देते हैं। बाप बनाते हैं पाउंड। इसको कहा ही जाता है शैतानी रावण–राज्य। रावण के शैतान कहा जाता है। परन्तु उनको शैतान क्यों कहते हैं। यह कोई नहीं जानते हैं। अब देखो गवर्मेन्ट कहती है कि छूत–छात निकाल ....। गांधी भी मेहतारी आदि के साथ बैठकर खाना खाते थे। कहते थे कि कोई भेद–भाव नहीं रखो। अच्छा खुद गवर्मेन्ट शंकराचार्य को अब हाथ तो लगावे। छू भी नहीं सकते। प्राईममिनिस्टर आदि सब लोग जाकर उनके ऑरगन्स परते हैं। समझते हैं कि यह तो महन्त है। यहाँ तो कहा ही जाता है कि वो तो हिरण्याकश्यप जैसे हैं। भगवान खुद कहते हैं कि आपने को ईश्वर मानते हैं वो बड़े–2 हिरण्याकश्यप हैं। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। तुम सभी ईश्वर के बच्चे हो ना। सर्वव्यापी कहने पर अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। सबमें परमात्मा है तो फादरहुड हो जाता है। सब फादर ही फादर हं तो फिर वर्सा कहाँ से मिले? किसी का भी दुःख कौन हरे? बाप को ही दुख हरता सुख करता कहा जाता है। फादर–ही–फादर का तो कोई अर्थ ही नहीं निकलता है। बाप समझाते हैं कि यह तो है ही रावण–राज्य है। यह भी ड्रामा में नूंध है। इसलिए ही चित्रों में भी क्लीयर करके दिखाया है। तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर है। बाप पुरुषोत्तम बनाने आए हुए हैं। जैसा बैरिस्टर्स, डॉक्टर्स आदि पढ़ते हैं वैसा ही मर्तबा भी पाते हैं। समझते हैं कि इस पढ़ाई से हम फलाना बनेंगे। यहाँ तो तुम सत के संग में बैठे हो। जिससे तुम सतधाम में जाते हो। सतधाम भी दो है। एक तो सुखधाम। दूसरा है

शान्तिधाम। यह है ईश्वर का धाम। बा पतो रचता है ना। अभी तुम बच्चे दिन–प्रतिदिन समझते जाते हो। बाप समझा कर फिर कहते हैं कि ऐसे–2 सर्विस करो। शिवबाबा के मन्दिर में जाओ। उस पर फूल, मक्खन, गुलाब के फुल वैरायटी क्यों चढाते हैं? कृष्ण के मन्दिर में कब भी अक के फूल नहीं चढ़ावेंगे। वहाँ तो बहुत अच्छे खुशबूदार फूल ले जाते हैं। शिव के आगे अक के फूल गुलाब के फूल चढ़ाते है। अर्थ तो कोई नहीं जानते। इस समय तो तुम बच्चों को बाप पढ़ाते हैं। कोई मनुष्य नहीं पढ़ाते हैं और सारी दुनिया में तो मनुष्य ही मनुष्यों को पढ़ाते हैं। कोई मनुष्य को भगवान कदाचित कहा नहीं जाता है। ल.ना. को भी भगवान नहीं कहा जाता है। देवी–देवता कहा जाता है। ब्र.वि.शं को भी देवता कहेंगे। भगवान एक बाप ही है वो है सब आत्माओं का बाप। सब कहते भी हैं कि हे परमपिता परमात्मा उनको सच्चा–2 नाम शिव है। और तुम बच्चे हो सालीग्राम। पण्डित लोग जब यज्ञ रचते हैं तो शिव को तो बहुत बड़ा बनाते हैं और शलिग्राम छोटे–2 बनाते हैं। शालिग्राम कहा ही जाता है आत्माओं को। वो ही सभी का बाप है। सभी है भाई–2। कहते भी हैं ब्रदरहुड। बाप के सब बच्चे भाई–2 है। फिर भाई–बहन कैसे हुए। प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से प्रजा रचते हैं। वो होते हैं ब्राह्मण और ब्राह्मणियाँ। हम प्रजापिता ब्रहमा की सन्तान हैं। इसलिये ब्र.कु.कु कहलाते हैं। तो ब्रह्मा को किसने पैदा किया? भगवान ने। ब्र.वि.शं यह भी क्रियेशन है। सूक्ष्मवतन के भी रचना हो गई ना। ब्रह्मा के मुख कमल से तुम बच्चे निकले हो। ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ कहलाते हो। तुम ब्रह्मा मुखवंशावली एडॉप्टेड हो। प्रजापिता ब्रह्मा भला बच्चे कैसे पैदा करेंगे? ज़रूर एडॉप्ट ही करेंगे। जैसे गुरू के फालोवरस एडॉप्ट होते हैं तो उनको कहेंगे शिष्य। तो प्रजापिता ब्रह्मा सारी दुनिया का बाप ... गया। उनको वही कहा जाता है ग्रेट–2 फादर प्रजापिता ब्रह्मा। तो यहाँ ही चाहिए ना। बाकी यह चित्र ... तो सब है भक्तिमार्ग के। प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ ही चाहिए ना। सूक्ष्मवतन में भी गाया हुआ है ब्र.वि.शं; परन्तु सूक्ष्मवतन मे प्रजा तो होती नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा कौन है? यह सब बाप ही बैठ समझाते हैं वो ब्राह्मण लोग भी अपने को ब्रह्मा की औलाद कहते हैं। अब ब्रह्मा कहाँ है? ऐसे तो वो न ही कहेंगे कि हम ब्रह्मा के बच्चे हैं। वो मर गया। यहाँ तुम ढेर ब्राह्मण बच्चे बैठे हैं। ब्रह्मा कहाँ है? तुम कहेंगे य... बैठे हैं। वो कहेंगे होकर गया है। फिर अपने को पुजारी ब्राह्मण कहलाते हो। अभी तुम तो प्रैक्टिकल में हो। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे तो अपास में भाई–बहन हो गये। ब्रह्मा को एडॉप्ट किया है शिवबाबा ने। कहते हैं कि मैं इस बूढे तन में प्रवेश कर तुमको राजयोग सिखाता हूँ। मनुष्य को देवता बनाना यह कोई मनुष्य का काम नहीं है। बाप को ही रचता कहा जाता है। भारतवासी जानते हैं कि शिव जयन्ति भी मनाई जाती है। शिव है बाप। मनुष्यों को तो यह भी पता नहीं है कि मनुष्यों को यह देवी–देवताओं का राज्य भी किसने दिया। स्वर्ग का रचता तो है ही प्रजापिता परमात्मा। जिनको पतित–पावन कहा जाता है। आत्मा असल प्योर होती है। फिर सतो,रजो,तमो में आती है। इस समय कलियुग में सब है तमोप्रधान। सतयुग में सब सतोप्रधान थे। आज से 5000 वर्ष पहले इन ल.ना का राज्य था। 2500 वर्ष चला। ल.ना. की डायनेस्टी चली। उनके बच्चों ने भी तो राज्य किया ना। ल.ना. दी फर्स्ट दा सेकेण्ड चला आता है। मनुष्यों को इन बात का कुछ भी पता नहीं है। इस समय है सब तमोप्रधान पतित। यहाँ एक भी मनुष्य पावन हो नहीं सकते हैं। सब पुकारते हैं कि हे पतित–पावन आओ। तो पतित दुनिया हुई ना। इसको कलियुग नर्क कहा है। सब पुकारते हैं कि हे पतित पावन आओ। तो पतित दुनिया हुई ना। इसको कलयुग नर्क कहा है। नई दुनिया को सतयुग पावन दुनिया कहा जाता है। फिर पतित कैसे बने यह कोई नहीं जानते हैं। भारत में एक भी मनुष्य नहीं है जो कि अपने 84 जन्मों को जानता हो। मनुष्य मेक्सिमम 84 जन्म लेते हैं। मिनीमम एक। भारत है अविनाशी खण्ड। शिवबाबा का यहाँ ही अवतार होता है। भारत खण्ड कब विनाश नहीं होता है। भारत खण्ड कब विनाश नहीं होता है बाकी सब खण्ड विनाश हो जाते हैं। इस समय

समय आदि सनातन देवी–देवता धर्म प्रायः लोप हो गया है। अ कोई भी अपने को देवी–देवता नहीं कहलाते हैं। क्यों देवता तो सतोप्रधान पावन थे। अभी तो सभी पतित पुजारी बन गये हैं। यह भी बाप ही बैठ समझाते हैं। भगवानवाच्य है ना। भगवान एक ही सबका बाप है। वो एक ही बार भारत में आते हैं। कब आते हैं? पुरुषोत्तम संगमयुग पर। इस संगमयुग को ही पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। यह संगमयुग कलियुग से सतयुग, पतित से पावन बनने का है। कलियुग में रहते हैं पतित मनुष्य। सतयुग में हैं पावन मनुष्य। इसलिए ही इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। जबकि बाप आकर पतित से पावन बनाते हैं। तुम यहाँ आये ही हो मनुष्य से देवता पुरुषोत्तम बनने। मनुष्य तो यह भी नहीं जानते हैं कि हम आत्मायें निर्वाणधाम की रहने वाली हैं। यहाँ आते हैं पार्ट बजाने। इस नाटक की आयु 5000 वर्ष है। हम इस बेहद के नाटक में पार्ट बजाते हैं। इतने सभी मनुष्य पार्टधारी हैं। यह ड्रामा का चक्र फिरता रहता है। कब बन्द होने का नहीं है। पहले–2 इस नाटक में सतयुग में पार्ट बजाने आते हैं देवी–देवतायें। फिर त्रेता में क्षत्रिय। इस नाटक को भी जानना चाहिए ना। मनुष्य एक भी नहीं जानते हैं। इसलिये ही इस समय के मनुष्यों को कहा ही जाता है बन्दर बुद्धि। यह है ही काँटो का जंगल। सब मनुष्य दुख में है। कलियुग के बाद फिर सतयुग आता है। कलियुग में 500 सो करोड़ मनुष्य हैं। तो सतयुग में कितने होंगे? बहुत थोड़े। सूर्यवंशी आदि सनातन देवी–देवता ही होंगे। यह पुरानी दुनिया अब बदलती है। मनुष्य सृष्टि से फिर देवताओं की सृष्टि होगी। आदि सनातन देवी–देवता धर्म था; परन्तु अपने को देवता कहलाते ही नहीं हैं। अपने धर्म को ही भूल गये हैं। यह सिर्फ़ भारतवासी ही हैं जो कि अपने धर्म को भूल गये हैं। हिन्दुस्तान में रहने कारण हिन्दू ही नाम रख दिया है। देवी–देवतायें पावन थे। यह है पतित। इसलिए अपने को देवता कह नहीं सकते। इसलिये ही अपने को देवता कह नहीं सकते हैं। देवताओं की पूजा करते रहते हैं। अपने को पुजारी नीच कहते रहते हैं अब बाप समझाते हैं कि तुम ही पूज्य थे और तुम्हीं आकर अब पुजारी पतित बने हो। ...सो का अर्थ भी समझाया है। वो कह देते हैं आत्मा सो परमात्मा। यह है झूठा और। झूठी माया.... सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे। सच्च खण्ड की स्थापना बाप करते हैं। झूठखण्ड फिर रावण बनाते हैं। यह भी बाप आकर समझाते हैं। सृष्टि की आदि–मध्य–अन्त को कोई नहीं जानते हैं। तो जानवरों से भी बदतर ठहरे ना। यह है ही बन्दरों की दुनिया। अभी तुमको बन्दर से मन्दिर लायक बनाया जाता है। आत्मा क्या है परमात्मा क्या है यह कोई एक भी नहीं जानते हैं। परमात्मा बाप ही आकर समझाते हैं। तुम आत्मा बिन्दी हो। उसमें ही 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। हम आत्मा कैसी है यह भी कोई नहीं जानते हैं। हम बैरिस्टर हैं, फलानी है। यह तो जानते हैं कि लेकिन आत्मा को नहीं जानते हैं। बाप ही आकर पहचान देते हैं कि तुम्हारी आत्मा में ही 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। जो तो कब भी विनाश नहीं होता है। इस ड्रामा की भी आदि–मध्य–अंत को नहीं जानते हैं तो वो इडियट ठहरे ना। यह दुनिया ही इडियटों की है। काँटो का जंगल है। एक दो को काँटे मारते रहते हैं। यही भारत गार्डन ऑफ फ्लोवर्स कहा जाता है। सुख ही सुख था। अभी तो दुख ही दुख है। यह बाप ही नॉलेज देते है। वो ही नॉलेजफुल है। तुमको कोई मनुष्य नहीं पढ़ाते है। इस पढ़ाई से तुम मनुष्य से देवता बनते हो। यह है नई बात। भगवान को सर्वव्यापी कहना यह तो गाली देना है। भक्त लोग बिल्कुल ही दुर्गति को पाये हुए हैं भगवान को गाली देते हैं कहते हैं कच्छ अवतार, मच्छ अवतार। ऐसी–2 ग्लानि की बातें हम सुन नहीं सकते। कण–2 में परमात्मा कह देते हैं। कितनी गाली है। अब बाप समझाते हैं कि मैं हर 5000 वर्ष के बाद आकर भारत को स्वर्ग बनाता हूँ। रावण फिर नर्क बनाते हैं। यह बातें दुनिया में और कोई नहीं जानते हैं। बाप ही आकर तुमको

मनुष्य से देवता बनाते हैं। गायन भी है कि मूत पलीती कपड़ धोये। वहाँ मूत होता नहीं है। वो तो है है ही सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। अभी है विशयष वर्ल्ड। वैश्यालय। बाप आकर शिवालय बनाते हैं। साधु सन्त आदि यह कोई भी नहीं जानते हैं कि भारत हैविन था। अब हेल है। फिर बाप आकर हेवन बना रहे हैं। यह सच्चा–2 सत्संग है जहाँ बाप बैठकर पढ़ाते हैं। मनुष्य नहीं पढ़ाते हैं। जिसमें प्रवेश किया है वो भी पतित आत्मा था। उनमें आ... हैं। बुलाते भी हैं कि है पतित–पावन आओ हमको रावण ने पतित बनाया है; परन्तु जानते ही नहीं हैं कि रावण कब आया क्या हुआ। रावण ने कितना कंगाल बना दिया है। भारत 5000 वर्ष पहले कितना साहूकार था। सोने, हीरे, जवाहरों के महल थे। कितना धन था। अभी क्या हालत हैं। सो ही सिवाय बाप के सिरताज कोई बना नहीं सकते हैं। अभी तुम कहते हो कि शिवबाबा भारत को हैविन बनाते हैं। गाते भी हैं कि हे पतित–पावन... परन्तु अपने को पतित कोई भी नहीं समझते हैं। अरे तुम पतित नहीं हो? तब तो गंगा स्नान करने पाप धोने जाते हो ना। तो कहते हैं पतित मनुष्य गंगा को पतित कर देते हैं फिर हम पांव डालकर पावन बनाते हैं। अब बाप कहते हैं कि मौत समाने खड़ा है। तुम सब वानप्रस्थी हो। अब जाना है वापस। इसलिये बाप कहते हैं कि अपने को आत्मा समझ मामएकम् याद करो तेा पाप भस्म हो जावेंगे। यह गोले का चित्र बहुत अच्छा है। परन्तु उससे भी बड़ा और क्लीयर बनाना चाहिए। प्रर्दशनी के लिये बाबा कहते हैं कि कोई किसी का जानने वाला हो तो टेन्ट बनवा देवे। उसमें एक हाल हो दो बेडरूम साथ में बाथरूम। काश्मीर में ऐसे टेन्ट आदि मिलते हैं। जिनको तो बरसात में भी कुछ नहीं होता है। तो ऐसा कोई बच्चा समझू सयाणा होवे जो बाबा को टेंट का प्रबन्ध करके देवे और अपनी कार का भी प्रबन्ध होवे। जिसमें प्रदर्शनी प्रोजेक्टर आदि और टेन्ट रखकर फिर गाँव–2 में देश–देशान्तर जाकर सर्विस कर सकते हैं। सैम्पल एक बनवाओ फिर 6'8 बनवा लेंगे। मोटर भी ऐसी हो जिसमें यह सब रख भी सके और 6,8 बैठ भी सकें। देश–देशान्तर सर्विस करते जावेंगे तो कितने स्वर्गवासी बनेंगे। मोटर में बॉडीगार्ड आदि भी मिलेगा। खर्चा बाबा देंगे। एक मास के अन्दर ही कोई टेन्ट का नमूना बना कर दिखावे। बच्चों को सर्विस का शौक होना चाहिए। हम ऐसे–2 सर्विस करके गरीबों का उधार करें। उनको स्वर्ग का मालिक बनावें। जितनी ऊँची पढ़ाई है उतनी ही खुशी होनी चाहिए कि हमको बाप भगवान पढ़ाते हैं। एम ऑब्जेक्ट सामने ही है तो कितनी खुशी होनी चाहिए; परन्तु चलते–2 गिर पड़ते हैं। बाप कहते हैं कि आपस में लून पानी नहीं बनो। जबकि जानते हो कि हम ऐसी दुनिया में जाते हैं जहाँ शेर–बकरी इकट्ठा जल पीते हैं। वहाँ तो हर एक चीज़ देखने से ही दिल खुश हो जाती है। नाम है स्वर्ग। बोलो अभी हम वहाँ जाने की तैयारी कर रहे हैं। पवित्र तो ज़रूर बनना ही पड़े। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। अब मैं योगी बनाता हूँ तो कहते हो कि विकारी ... गी बनो। शर्म नहीं आती है। बाप बन कर हमको काम कटारी के नीचे डालना चाहते हो बात करने की अक्ल चाहिए। ऐसी–2 जब निकलेंगी तब देखना कितनी जल्दी शो होगा; परन्तु चाहिए नष्टोमोहा। एकबार मर गये तो फिर याद ही क्यों आना चाहिए। परन्तु बहुतों को बच्चों आदि की याद आती रहती है। जैसे कि बन्दरियाँ हो। फिर बाप के साथ योग ही कैसे लगेगा। इसमें तो यही बुद्धि में रह कि हम शिवबाबा के है। यह पुरानी दुनिया तो खत्म ही हुई पड़ी है। बाप कहते हैं मुझे .... करो। बाकि सब भूल जाओ। बाबा ने भी छोटेपन मैं बहुत कुछ पढ़ा है फिर बड़ेपन में सब भूला है। वो है सब दंत कथायें। अब बाप बच्चों को कोई तकलीफ नहीं देते है। सिर्फ़ कहते हैं कि मौत से पहले बाप से वर्सा ले लो। बाप को याद करो। और 84 का चक्र याद करो। उसमें ही सब आ जावेगा। बाप बीज तो सारे झाड़ को जानते है ना। बाप कहते हैं कि तुम बच्चों को ही यह ज्ञान देता हूं। ... द्वारा सुनने से ही तुम स्वर्दशनचक्रधारी बनते हो; परन्तु यह अलंकार तुमको शोभते नहीं है। इसलिए विष्णु को दे दिये हैं। बाकी स्वदर्शनचक्र से किसी को मारने की बात नहीं है। अच्छा बच्चों से गुडमार्निंग।